द्वितीय अध्याय

हिन्दी में व्यंग्य साहित्य की परंपरा ।

द्वितीय अध्याय

हिंदीमें व्यंग्य साहित्य की परंपरा :

देव, दानव और मानव शुरू से ही व्यंग्य का प्रयोग करते आये हैं। इतिहास का ऐसा कोई भी कालखंड नहीं मिलता कि, जिसमें व्यंग्य का सहारा न लिया गया हो। तबसे लेकर अबतक केवल व्यंग्य के स्वरूप में और उद्देश्य में फर्क आया है। प्राचीन काल का सीधा - सादा समाज जटिल बनता गया और उसके साथ साथ व्यंग्य भी अपनी मुद्राएँ बदलता गया। इसीलिये तो आजका व्यंग्य पहलेवाला नहीं रहा।

आजका व्यंग्य युग के महान मानवीय गुणों से संबंधित रहकर अपनी जिम्मेदारियों को सफलता के साथ पूर्ण करते हुये मनुष्य को सत्यकी ओर ले जा रहा है। पूरे मानव जीवन को दूरबीनी आँखों से चौतरफा देखता है। यह व्यंग्य बेलौस, निर्भीक, सच का साथी, झूठ का दुश्मन, छुप-छिपकरपनपनेवाली वर्गीय शक्तियों की पोल खोलनेवाला कर्म मे विश्वास रखनेवाला है। साथ ही अपने कर्तृत्व से समाज को बदलने का तथा पूरी राजनीति को समाजवादी राहपर प्रस्तुत करनेवाला है। दलित, दीन-हीन, शोषितों को रास्ता दिखानेवाला है। इस-प्रकारकी महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले व्यंग्य लेखकों की अपनी एक खास पहचान होती है। इसका कारण यह है कि, प्रत्येक लेखक की व्यंग्य करने की अपनी शक्ति होती है। इसीकारण ही अमरिका के मार्क ट्वेन, ब्रिटन के बर्नार्ड शॉ, रूस के एण्टन चेखव, भारत के भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा उनके समकालीन और आधुनिक काल के हरिशंकर परसाई अपनी विशेष व्यंग्य शक्ति के कारण साहित्य जगतमे प्रसिध्द है। सभी देशों के साहित्य में व्यंग्य साहित्य का अपना विशेष स्थान रहा है।

समाज में होनेवाले अंतर्विरोधों की अधिकता तथा दुर्दम्यता के अनुसार व्यंग्य की आवश्यकता महसूस होती है। साहित्य के इतिहास को देखते हुये यह बात हमारी समझमें आती है कि, प्रत्येक युगकी जरूरत के अनुसार ही उस युग को व्यंग्यकार मिलता है। इसी जरूरत की पूर्तिके लिये ही हिंदी साहित्य के जन्मकाल के दिनों में नाथों तथा सिध्दों का साहित्य निर्माण हुआ है। इस साहित्य के द्वारा जात-पाँत, छुआ-छुत, ऊँच-नीच तथा पाखंडपर तीखा प्रहार किया गया। इसी परंपरा में आगे चलकर जो एक वैशिष्ट्यपूर्ण कड़ी निर्माण हुवी, उसमे कबीर का स्थान महत्वपूर्ण है। ` कबीर, मस्ती, फक्कडपन, स्वभाव और सबकुछ को झाड-फटकार करके चल देनेवाले तेजने कबीर को हिंदी साहित्य का अद्वितीय व्यक्ति बना दिया। `

आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के इस व्यक्तव्य से साहित्यकार की शक्ति का परिचय मिलता है। इसी शक्ति की सहायता से धर्म और समाजमें फैली गंदगी को साफ करनेका मौलिक कार्य कबीर ने किया है। इसीकारण कबीर के बारेमें जो धारणाएँ पहले थी, वह उन्हें पढ़नेके बाद नहीं रहती। वे एक विध्वंस विशेषज्ञ के नाते हमारे सामने आते हैं।

भारत की आम जनतापर अँग्रेजों तथा जमींदारों ने जो अन्याय किये, उन्हीं शोषक मूलक समस्याओंपर प्रकाश डालने का कार्य प्रेमचंद ने अपनी कहानियाँ तथा उपन्यासोंद्वारा किया और इस कार्य के लिये उन्होंने माध्यम के रूपमें साहित्यकी व्यंग्य विधा को ही अपनाया। प्रेमचंद का `कफन` और निराला का `कुकुरमुत्ता` प्राय: एक ही समय की रचनाएँ है। इन रचनाओं मे वर्णित घीसू तथा माधव समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो कुकुरमुता का वर्ग है और जमींदार गुलाब के वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतमें जैसे जैसे यह दमन -शोषण की

प्रवृत्ति बढ़ती गयी, वैसे वैसे बुध्दिजीवी लोग उसका विरोध करने के लिये तैयार हुवे। सामाजिक यथार्थ को उसके वास्तविक रूपमें समझाने के लिये हिंदीके प्रयोगवादी काव्य में व्यंग्य दिखायी देने लगा। भारत स्वतंत्र होनेसे पहले समाज के विभिन्न वर्गों के बीचका अंतर जाननेके लिये प्रेमचंद का परवर्ती कथा - साहित्य और निराला का परवर्ती काव्य हमें मार्गदर्शन करता है। स्वतंत्रता प्राप्तिके बाद के सामाजिक संबंधों तथा सत्तापर आरूढ लोगों के चरित्रों को समझानेके लिये हरिशंकर परसाईका व्यंग्य साहित्य हमारा मददगार बनता है। हमें यह विश्वास दिलाता है कि, परसाईजी हमारे सबसे अधिक विश्वसनीय, प्रामाणिक और जागरूक साथी हैं।

हिंदी साहित्य के विविध युगों के समाज, सामाजिक मूल्यों तथा मानवीय पीड़ा को समझाने के लिये जिन्होंने व्यंग्य को माध्यम के रूपमें चुना था, ऐसे साहित्यकारों में कबीर, भारतेंदु, हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त, निराला तथा हरिशंकर परसाई प्रमुख है।

कबीर :

केवल साहित्यिक भाषा की वक्रता को `व्यंग्य` नहीं कहा जाता। व्यंग्य वस्तुओं के बीच होनेवाली असंगति से निर्माण होता है। कोई भी दो वस्तुएँ एक-दूसरे के संपर्क में आनेपर अपनी शक्ल तथा तत्वों का एक - दुसरेपर प्रभाव निर्माण करती है। इसी को ध्यान में रखते हुवे कहा जा सकता है कि, भाषा की शाब्दिक वक्रता में व्यंग्य नहीं होता। व्यंग्य समाज की वस्तुगत परिस्थितियों में निहित असंगतियों को विशेष साहित्यिक गुणों से युक्त भाषा में दी गयी अभिव्यक्ति है।

सीधी सहज तथा लाक्षणिकता से युक्त भाषा में तेज या धारदार

बात कहने की क्षमता होती है जो कि श्रेष्ठ व्यंग्य तथा व्यंग्यकार का लक्षण मानी गयी है। यह बात कबीर में अत्यधिक मात्रा में पायी जाती है।

कबीर हिंदी के वे पहले व्यंग्य लेखक हैं, जिन्होंने समाज में फैले बाह्याडंबर को भेदकर सत्य की खोज करने का सफल प्रयास किया। समाज में व्याप्त रूढियों और आडंबरों को छिन्न-भिन्न करने के लिये कबीर ने व्यंग्य का प्रयोग किया। व्यंग्य को उपहास और मजाक के स्तर से ऊपर उठाकर, उसके प्रहारक-सुधारक रूप को स्पष्ट किया। समाज के पाखंडपूर्ण आचरण, हिंदु-मुस्लिम संस्कृति के अवगुणों, जातिभेद और धोखेबाजीपर कबीर ने नश्तर की तरह तेज व्यंग्य किया। इसी व्यंग्य के सहारे उन्होंने धार्मिक तथा सामाजिक विद्रूपतापर आक्रमण किया। इन सारे प्रयत्नों में कबीर ने अपने क्रांतिकारी व्यक्तित्व का परिचय हमें करा दिया है। इस संदर्भ में प्रो.क्रांतिकुमार जैन ने लिखा है -

"धर्म और समाज का मलबा साफ करने का जो कार्य कबीर ने किया, वह किसी और से नहीं हुआ, यह केवल संयोग की ही बात नहीं है कि, हमारे युगके सबसे बड़े व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई स्वयं को कबीरदास का भक्त घोषित करते हैं। कबीर के सीधे, बेलौस, बखिया उधेड़, उतार मस्ती और फक्कडपन से भरे व्यंग्यों का मैं भक्त रहा हूँ।"(१)

हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'एक जबरदस्त व्यंग्यकार' के रूपमें स्वीकार किया है और साथ में उनके व्यंग्य में मौजूद विशेषताओं का भी उल्लेख किया है।

भारतेंदु हरिशंद्र :

रीतिकाल और परवर्ती काल में सामाजिक

समस्याओं की आँच धीमी पड़ गयी थी, जिसे फिर से सुलझाने का कार्य भारतेंदुने किया है । अपने समय के समाज से सीधा साक्षात्कार करने की ताकद भारतेंदु में थी । भक्तिकाल और रीतिकाल के दीर्घ-काल में व्यंग्य की मात्रा कुछ कम दिखायी देने लगी थी, ऐसे समय भारतेंदु हरिश्चंद्र ने फिर एक बार व्यंग्यकी प्रवृत्ति को साहित्य में उदित कर दिया ।

भारतेंदु नवीन युग की सुधारचेतना से प्रभावित थे । अंग्रेजी शासन के विरोध में उनके मन में आक्रोश था । वे किसी विशेष उद्देश्य से साहित्य की रचना करना चाहते थे । इसीकारण काव्य, निबंध तथा नाटक आदि सभी में उन्होंने व्यंग्य का प्रयोग किया ।

आधुनिक युग की शिक्षाप्रणाली पर तीखा प्रहार करने के लिये ' एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न ' जैसी फंटैसी का उन्होंने निर्माण किया । खडीबोली की कविताएँ तथा ' अँधेर नगरी चौपट राजा ' और ' वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति ' आदि नाटकों में उन्होंने व्यंग्य को ही अपनाया है । ' अंग्रेज स्तोत्र ' में इसी व्यंग्य के माध्यम से अंग्रेजी शासकों के लालची और लुटेरे स्वरूप का वर्णन किया है ।

भारतेंदु का व्यंग्य कहींपर पीटनेवाला तो कहींपर चुभनेवाला महसूस होता है । पैसा लेकर किसी की जाति को जो चाहो सिध्द करा देनेवाले पंडितों का ' सबै जात गोपाल ' में मजाक उडाया है । भारतेंदु अपने समय में शायद व्यंग्य लिखनेवाले अकेले थे, लेकिन उनके अंतिम समय के दिनों में उनके साथ देशभक्त लेखकों का एक मंडल था, जिसमें राधाचरण गोस्वामी, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त जैसे प्रतिभासंपन्न लेखक थे । भारतेंदु तथा उनके सहयोगी लेखकों द्वारा व्यवस्थित और जमे हुये तरीके से व्यंग्य का प्रसार हुआ ।

भारतेंदु ने व्यंग्य से परिपूर्ण नाटकों की निर्मिति की और इस बात का परिचय दिया कि, ऐसे व्यंग्य लिखने के लिये मजबूत और विशाल कलेजे की जरूरत होती है। भारतेंदु के सीधे, स्थूल और दाँव-पेंचों से मुक्त व्यंग्यों ने सामाजिक चेतना को प्रवाहित करने में विशेष रूपसे मदद की। कभी कभी उनके व्यंग्य हास्य के निकट पहुँच जाते हैं, पर तात्कालिक परिवेश के माहौल में अधिक सार्थक लगते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवनकाल के कितने ही लेखकों में प्रौढ व्यंग्य देखने को मिलता है।

बालमुकुंद गुप्त :
============

भारतेंदु ने व्यंग्य से युक्त राजनीतिक लेख लिखने की जो परंपरा शुरू की थी, उसकी पूर्ण अभिव्यक्ति बालमुकुंद गुप्तके निबंधों में हुयी है। गुप्तजी भारतेंदु की तरह देशभक्त, जनतंत्र के हिमायती, श्रेष्ठ पत्रकार तथा नये लेखकों को प्रेरणा देनेवाले थे। उनके बारेमें मार्क्सवादी आलोचक रामविलास शर्माने लिखा है -

` गुप्तजी की कला व्यंग्य, हास्य, लतीफों, सरल मुहावरेदार जबान युक्ति और तर्क से निखरी हुयी है। ` (२)

बालमुकुंद गुप्तजी के ` शिव-शंभूके चिठ्ठे ` व्यंग्यपूर्ण गद्य के अपूर्व उदाहरण माने जा सकते है, जो राजनीतिक व्यंग्यों से युक्त है। लॉर्ड कर्जन, लॉर्ड मिण्टो, पश्चिमी बंगाल के गवर्नर और संपूर्ण अंग्रेजी राज्यपर उन्होंने व्यंग्य किया है। इसीकारण वे प्रेमचंद तथा निराला के पूर्वज माने जा सकते है।

पं. बालकृष्ण भट्ट :

पंडित बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के प्रसिध्द लेखक थे।

द्विवेदी युग के प्रथम दशक तक हिंदी सेवा बड़ी लगन से करनेवालों में वे एक थे। बहुत बड़े विद्वान, समाज-सुधारक और राष्ट्रप्रेमी थे। पाखंड और दिखावे की खिल्ली उड़ाने में निर्भीक थे। हास्य, विनोद, व्यंग्य को सही रूपमें प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता उनकी मात्रा में थी।

जवान, लौ लगी रहे, ढलती उमर जैसे लेखों में व्यंग्य का तीखापन देखने को मिलता है। `लोक-एषाणा` इस लेख का व्यंग्य शिष्ट और मर्यादित है, जो चुभता नहीं, बल्कि पाठकों को सहला भर देता है।

प्रताप नारायण मिश्र :

पं.प्रतापनारायण मिश्र भारतेंदु हरिश्चंद्र के सहयोगी और भक्त थे। उन दिनों पादरियों का भारत के निर्धनों और अछूतों को ईसाई बनाने का काम बहुत जोरोंपर था। मिश्रजी ऐसे प्रसंगों की ताकमें रहते और मौका मिलतेही उन लोगोंकी हँसी उड़ाते। खुद कनौजिया ब्राह्मण थे, पर अपनी जाति की कूपमंडूकता से उन्हें बेहद चिढ थी। जिसे वे हास्य-व्यंग्य द्वारा व्यक्त करते थे।

मिश्रजी का व्यंग्य केवल मनोरंजन के लिये नहीं था, वे एक जागरूक हिंदी सेनानी थे। कभी विनोद की पुचकारसे तो कभी व्यंग्यकी मार से समाज को सचेत करते हुवे प्रगति के पथपर ले जाना चाहते थे। उनके व्यंग्य में छिछलापन नहीं था तथा किसी को आहत करनेवाला पैनापन नहीं था।

महावीर प्रसाद द्विवेदी :

द्विवेदीजी हास्य और व्यंग्य को समाज और साहित्य का

परिष्कारक और शासक समझते थे। धार्मिक आडंबर या धर्म के नामपर समाज में फैले भ्रष्टाचार के संबंध में वे अधिक ध्यान नहीं दे सकें। फिर भी एक-दोन अवसरोंपर प्रसंगानुरूप धार्मिक कुरीतियों पर उन्होंने व्यंग्य किया है।

भारतीयों पर अंग्रेजों के विशेष प्रभाव को देखकर, ऐसे स्थलों-पर व्यंग्य तो जरूर करते थे, पर उद्देश्य की पवित्रता और दृष्टिकोण की उदारता के कारण वह चुटीला नहीं होने पाता था। द्विवेदीजी के समय में हिंदी-व्याकरण का रूप स्थिर नहीं हो पाया था। व्याकरण-ग्रंथो की निर्मिती में अधिक गंभीरता नहीं दिखायी जाती थी। इसलिये असावधानी से लिखे व्याकरणों की वे व्यंग्यपूर्ण आलोचना करते थे। द्विवेदीजी के साहित्य में प्राप्त व्यंग्य विनोद अपने उद्देश्य प्राप्ति में सफल हुआ है।

शिवपूजन सहाय :

शिवपूजन सहायने इस बात को सिध्द करने का प्रयास किया है कि, हास्य-व्यंग्यकी गुंजाईश केवल नाटक-लेखन में ही नहीं हुआ करती है, बल्कि निबंध, उपन्यास, कहानियाँ, संस्मरण , रेखाचित्र जैसी साहित्य की अन्य विधाओं में भी हास्यव्यंग्य को पाया जाता है।

हास्य-व्यंग्य के निर्माण में सहायजी विशेष जागरूक थे। हास्य-व्यंग्यका निर्माण वे अपने व्यक्तित्व के अनुरूप ही करते रहे। न उनमें आध्यात्मिक उत्साह अधिक था, न वे नग्न यथार्थ के पक्षपाती थे। सहायजी ने जीवन के प्राय: सभी पक्षोंपर विशेष रूपसे ध्यान दिया था। पूर्व दुर्बलताओं, असंगतियों परस्पर विरोधी तथा विपरीत परिस्थितियों के निरीक्षण परीक्षण में सहायजीने हास्य-व्यंग्य का सफल प्रयोग कियाा है।

जयशंकर प्रसाद :

प्रसादजी नाटकों में हास्य-व्यंग्य की आवश्यकता को स्वीकरते है। क्योंकि उसका उद्देश्य बहुत ही स्वस्थ होता है। हास्य-व्यंग्य मानव सुधार या संशोधन का बहुत उपयोगी साधन है, ऐसा उनका मत है। परिचय की घनिष्ठता के साथ साथ व्यंग्य में भी तीखापन आ जाता है। अपरिचितों का हास्य-व्यंग्य, आत्मीयजनों का व्यंग्य, और समवयस्कों का हास्य-व्यंग्य इन तीन रूपोंमें प्रसादजी के नाटकों में हास्य और व्यंग्य पाया जाता है।

हजारीप्रसाद द्विवेदी :

द्विवेदीजी के व्यंग्य विनोद बड़े सहज और सटीक होते है। कभी कभी तो सुननेवाले को इस बातका एहसास भी नहीं होता कि, यह चुटकी उसीपर ली गई है। सीधीसादी भाषा में गहरी चोट करने का सामर्थ्य रखनेवाले कबीरकी तरह द्विवेदीजी के व्यंग्य भी तिलमिला देते हैं। लेखक अपने युग की उपयोगितावादी मनोवृत्ति और उच्छ्वासित भावुकता को व्यंग्य के माध्यम से एक साथ ही खबरलेते हैं। द्विवेदीजी ने राजनीतिज्ञों के स्वार्थ संघर्ष और अपने आसपास के वातावरण में व्याप्त संक्रामक मूल्यहीनतापर तीव्र कुठराघात किया है, तो दूसरी ओर सामान्य जनता की अशिक्षा, अंधविश्वास और धर्म के ठेकेदारों के आडंबरों एवं मिथ्याचारों की भी व्यंजनात्मक शैली में आलोचना की है।

दो विरोधी वस्तुओं को समानांतर उपस्थित कर व्यंग्य को तीखे रूपमें प्रस्तुत करना द्विवेदीजी का अपना निजी कौशल है। शायद सगोत्रीय होने के कारण सबसे मीठी चुटकी साहित्यकारोंपर लेते हैं। गंभीर विषय की चर्चा में भी साहित्यकारों के विनोदपूर्ण स्मरण का अवकाश निकाल ही लेते हैं।

द्विवेदीजी देशी भाषाओं के प्रबल समर्थक हैं, इसीलिये तो उन्होंने अंग्रेजी-प्रेमियों की मनोवृत्तिपर एकाधिक चुटकियाँ ली है। बिगड़ी सूरत बनाकर बैठे, मनहूस चेहरे के लोगोंपर द्विवेदीजी ने गहरा व्यंग्य किया है।

महादेवी वर्मा :

महादेवी के गद्य में प्राप्त व्यंग्य संयत तथा स्नेह प्रसूत है। उनका व्यंग्य पक्षपातरहित है। शोषक पुरुष वर्ग समाज, तथा उसकी दुर्नीतियोंपर जहाँ उन्होंने व्यंग्य किया है, वहीं शोषित एवं अधिकार के इच्छुक अन धिकारी नारी वर्ग को भी उनके व्यंग्याघात सहने पड़े है। महादेवी के व्यंग्य सामाजिक रूढ़ियों, बंधनों, अंधविश्वासी ग्रामीण लोगों की दकियानुसी वृत्तिपर तीखा प्रहार करता है। जातीय संस्कार संकुचित स्वार्थ की सिध्दि के लिये कुसंस्कारों को जन्म देते हैं। इसी बात को भी महादेवी ने अपने व्यंग्य का विषय बनाया है।

अतिशय चालाक पिता की व्यवहार-कुशलता तथा चातुर्य का परिचय तथा नारी की विवशता और सामाजिक संस्कारों को व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त किया है। धन और वैभव के पासंगपर तौलनेवाली महिलाओंपर उन्होंने कटु व्यंग्य किया है। स्त्री-समस्या से संबंधित स्थलोंपर उनका व्यंग्य अधिक कटु हो गया है। उन्होंने स्त्री तथा पुरुष के स्वभाव की विभिन्नता के निरूपण में व्यंग्य का सहारा लिया है। उनके निबंधों में व्यंग्य का स्वर अधिक तीव्र हो गया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल :

शुक्लजी की व्यंग्यकथन की क्षमता अद्भुत है। उनका व्यंग्य प्राय: सर्वत्र शिष्ट, गंभीर और पांडित्य पूर्ण ही है, क्योंकि उन्होंने केवल उन्हीं स्थलोंपर व्यंग्य का आश्रय लिया है, जहाँ किसी कवि, लेखक या आलोचक के

मत से वे सहमत नहीं हो सके । उनमें साहित्यपर किये गये व्यंग्यों की संख्या सबसे अधिक है । अपने गंभीर चिंतन के मध्य उन्होंने समाजपर भी चुटीले और मार्मिक व्यंग्य किये हैं । भाषा के संबंध में भी उनकी कृतियों में व्यंग्य दिखायी देता है । अर्थात साहित्य संबंधी, समाज संबंधी, भाषा संबंधी, व्यंग्य उनमें मुख्य रूपसे दिखायी देता है, साथ में आत्मपरक घटना का उल्लेख करते समय किये गये व्यंग्य और नितांत व्यक्तिगत स्तरका व्यंग्य शुक्लजीके रचना-साहित्य में दिखायी देता है ।

समाज में धनकी महिमा बढ़ जाने को ही शुक्लजी सारे भ्रष्टाचार का मूल समझते हैं, और व्यंग्य के माध्यम से उसकी ओर संकेत करते हैं । धन के लोभ से ही शुक्लजी के विचार से मानवता का पतन हुआ है । यह बात वे व्यंग्य के माध्यम से कहते हैं । लोभियों और योगियों की तुलना करते हुये शुक्लजी ने जो गहरा व्यंग्य किया है, वह निश्चित ही अनुठा है ।

लक्ष्मीनारायण मिश्र :

मिश्रजी के नाटकों में हास्य और व्यंग्यका उन्मुक्त प्रवाह दिखायी देता है । हास्य और व्यंग्य का निकटतम संबंध उनके साहित्य में दिखायी देता है, पर हास्यतत्व का निर्वाह ही अधिक सफलता के साथ हुआ है ।

राहुल सांकृत्यायन :

राहुलजी का कथासाहित्य विशाल है । राहुलजी ने निराला की तरह अपनी बात को अत्यंत स्पष्ट और उग्र शब्दों में कहा है । साथही कबीरकी तरह उनके व्यंग्य सत्य और अनुभव पर आधारित है । उस समय का धर्म, समाज कबीर के व्यंग्यों से तिलमिला उठा था । उसी प्रकार आज के युग में धर्म और समाज के ठेकेदारों को राहुलजी के व्यंग्य कटु लगे तो आश्चर्य की कोई बात नहीं । सत्य और उसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति ही राहुलजी का

धर्म था, जिसे व्यंग्य के माध्यम से निभाने का प्रयास उन्होंने किया है।

प्रेमचंद :

प्रेमचंद ने यथार्थ जीवन के महाकाव्यसम महत्त्ववाले उपन्यास लिखे। प्राय: गांधीवादी आदर्शों का प्रचार किया। उनकी रचनाओं मे कितने ही स्थलोंपर व्यंग्य की झलक देखने को मिलती है। उनकी व्यंग्यात्मकता की सही परख करते समय यह कहना गलत न होगा कि, वे आज की हिंदी के उपन्यासकारों से भी बहुत कुछ प्रगत थे।

उर्दू साहित्य में भी हास्य और व्यंग्य दिखायी देता है। इस परंपरा में अमीर खुसरो का नाम गर्व से लिया जा सकता है।

निराला :

प्राय : साहित्य में व्यक्तिगत और सामाजिक इन दो आधारोंपर व्यंग्य की निर्मिती की जाती है। निराला का व्यंग्य सामाजिक आधारपर खड़ा है। उन्होंने व्यंग्य के मूल आधार के रूपमें पूँजीवादी सभ्यता के दुष्परिणाम, राजनीतिज्ञोंकी वाचाल ढोंगी मनोवृत्ति को ही माना है। यद्यपि उन्होंने ब्राह्मण, पुरोहित, नेता, शासक, शोषक और ढोंगी लोगोंपर व्यंग्य किया है, फिर भी उनका व्यंग्य व्यक्तिगत न होकर सामाजिक ही लगता है। पहले महायुध्द की कटु स्मृतियाँ अभी लोग भूले नहीं थे कि, दूसरा महायुध्द अपने भयानक रूपमें सामने आया। ऐसी स्थिति में निराला ने अपने व्यंग्य की धार को और तेज बनाया। निराला का `कुकुरमुत्ता` सबसे महत्वपूर्ण है, जिसमें तीव्रता और व्यापकता को एक साथ देख सकते है, जिसका व्यंग्य बेजोड़ है। यह व्यंग्य किसी एक व्यक्ति, वर्ग, समाज, राष्ट्रपर ही लागू नहीं होता, बल्कि जीवन की विविध स्थितियोंपर प्रहार करता है। गुलाब उच्चवर्गका तथा कुकुरमुत्ता निम्नवर्गका प्रतिनिधित्व करता है और इसमें दोनों का भी मजाक उडाया गया है। जिस समय व्यक्तिगत या संगठित

तौरपर पाशवी शक्तियों को बढ़ावा मिलता है, सत्य का गला घोंटकर मिथ्या और धूर्तता की पूजा होने लगती है, ऐसे समय साहित्यकार को व्यंग्य का अस्त्र अपनाना होता है। इसी व्यंग्य का काफी सफलतापूर्वक प्रयोग निराला ने किया है।

हिंदी साहित्य में व्यंग्य की यह धारा अधिक तेज गति से तथा पूरी तीव्रता के साथ प्रवाहित हुवी। इस प्रवाह में कुछ और व्यंग्यकारों का उल्लेख करना निश्चित रूपसे समीचीन होगा। आधुनिक काल में व्यंग्य के क्षेत्र में हरिशंकर परसाई का नाम विशेष प्रसिध्द है। उनके बारेमें विस्तृत जानकारी हासिल करने से पहले उनके समकालीन व्यंग्यकारों का तथा उनके व्यंग्य को समझ लेना ठीक रहेगा। इस सिलसिले में निम्नलिखित व्यंग्यकारों का उल्लेख किया जा सकता है।

नरेंद्र कोहली :

नरेंद्र कोहली एक ऐसे व्यंग्यकार है, जिन्होंने स्वय को परंपरागत व्यंग्य लेखनमें ही बंध नहीं जाने दिया। उन्होंने परंपरागत व्यंग्यकथा के, निबंध के साथ साथ व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य नाटकों का सफल प्रयोग किया। उनका शिल्पगत प्रयोग निश्चित रूपसे श्रेष्ठ दर्जेका है। नरेंद्र कोहली के मतानुसार प्रत्येक विषय अपने लिये एक विशिष्ट शिल्प की माँग करता है, अत: विषय की विवेचना और नवीन दृष्टि के अभाव मे नए शिल्प का जन्म नहीं हो सकता। उन्होंने व्यंग्य को सदा सार्थक रूपमें स्वीकार लिया वह तीखा, गहरा और नुकीला व्यंग्य है, जिससे अभिधात्मक कटाक्ष हो जाने की शिकायत तो हो सकती है, पर वह हल्का कहीं नहीं हो सकता।

सुदर्शन मजीठिया :

मजीठिया का व्यंग्य अपने आपमें एक मुक्त और सहज भाव लिये रहता

है। हर विकृतिपर हँसना तथा उसकी बेबाक खिल्ली उडाने में उसका व्यंग्यकार नहीं चूकता। चारों ओर की स्थितियोंपर वे अपने कलमका ट्रॅक्टर निरंतर दौडाते रहते हैं। उनका व्यंग्यलेखन सुविधा - परस्त लोगों के लिये नहीं है। जीवन की समझ को उन्होंने गहराई से प्रस्तुत किया है। उनकी हर एक व्यंग्य रचना अपने आपमें एक नया प्रयोग होती है।

अमृतलाल नागर :

अमृतलाल नागरका व्यंग्य ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनो हैं जो उनके बहुमुखी शिल्पका प्रतिनिधित्व करता है।

विवेकीराय :

कथाकार, निबंधकार तथा समीक्षक के साथ साथ विवेकीराय का परिचय एक व्यंग्यकार के रूपमें मिलेगा। अतिशय आकर्षक व्यंग्यका स्वाद उनमें है। व्यंग्यकार के नाते वे व्यंग्य के घिसेपिटे और चिरपरिचित आलंबनों तथा माध्यमों को सर्वथा नये रूपमें प्रस्तुत कर उनकी ताजगी और मौलिकता को अत्यधिक धारदार बना देते है। व्यंग्य की चोट अमोघ होती है और व्यापक जीवन की समस्याओं से जुडी होनेके कारण उसका मूल स्वर विध्वंसक न होकर सर्जनात्मक होता है। उनके जादुई शैली के व्यंग्य के जिंदा स्पर्श से पाठकीय चेतना को पनपने देते हैं और यही कारण है कि, वे पठनीय बन जाते हैं।

श्रीलाल शुक्ल :

व्यंग्य दरमसल रचनाकार की संवेदनशीलता और उसके तीक्ष्ण कलात्मक रूपांतरण का निकष होता है। शुक्लजी की व्यंग्य रचनाएँ हमारी जिंदगी के जीवंत प्रश्नों को हू - ब - हू हमारे सामने पेश करती है। हमारे चेतन मन को उद्वेलित करती है और एक सक्रिय संवाद कायम करने में

कामयाब होती है। व्यंग्य रचनाएँ चीजों और स्थितियों की तीखी प्रतीति के जरिये आदमी की अस्मिताको गढ़ती चलती है, ऐसा उनका मत है।

रवींद्रनाथ त्यागी :

अपने शालीन व्यंग्य के लिये विख्यात त्यागीजी की रचनाएँ मानव के अंतर्मन को उद्घाटित करती हैं। उनकी मर्मांतक अभिव्यक्ति देखने लायक है। जो अपनी व्यंग्यात्मकता के कारण एक ओर जहाँ पाठक को झकझोरती है, वहीं दूसरी ओर सोचने विचारने की भूमिका भी निभाती है।

व्यंग्यकी इस परंपरा में गोपालप्रसाद व्यास, विद्यानिवास मिश्र, शरद जोशी आदि और भी नाम गिने जा सकते है। हिंदी व्यंग्य की विशेष परंपरा में हरिशंकर परसाई का नाम उल्लेखनीय है। परसाई स्वतंत्र भारत के लेखक है, उनके लेखक रूपका विकास स्वतंत्र भारत के वातावरण में हुआ है। अत: पिछले ३०-३५ वर्षों के सामाजिक, राजनीतिक संघर्षों के दौर में विकसित सामाजिक चेतना ही परसाईजी के लेखन की प्रमुख अंर्तधारा रही है।

हरिशंकर परसाई :

परसाईजी एक गहरी सामाजिक जिम्मेदारी माननेवाले है और इसीकारण एक लेखक की हैसियत से अपने समय में होनेवाले चुनौतियों का सामना करते है। परसाईजी का व्यंग्य लेखन प्रताप नारायण मिश्र तथा बालमुकुंद गुप्त की तेजस्वी परंपरा से काफी मिलता जुलता है। उनकी व्यंग्य लेखन की शक्ति तथा सार्थकता हिंदी जाति परंपरा का विकास

करत है। सिध्दों और नाथों की परंपरा से जुडे हुवे परसाईजी की हिस्सेदारी काफी कुछ महत्व की है।

आजाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू से लोगों ने यह उम्मीद लगायी थी कि, अब उनकी दयनीय हालत सुधरेगी पर कोई सुधार नहीं हुआ। परिणामत: परसाई के लेखन में यथास्थितिवादी राजनीति का विशेष प्रभाव रहा।

परसाई स्वतंत्रता को वर्गीय दृष्टि से देखते थे। वे जान गये थे कि, आजादी का अधिकांश लाभ तो संपत्तिशाली लोग ही उठा रहे है और मेहनतकश जनता का और भी शोषण हो रहा है। इसलिये उन्होंने अपने लेखन में यथास्थिति राजनीति से गुणात्मक रूपमें भिन्न राजनीतिका प्रभाव बढ़ा दिया। काँग्रेसी शासनद्वारा जैसे जैसे जनता की आकांक्षाओं का भंग होता रहा, वैसे वैसे उन्होंने पूरी समाजव्यवस्था को ही अपनी लेखनी का निशाना बनाया।

आजादी मिलने के बाद गांधीजी के सपने तो बिल्कुल हवा में उड गये। इसीकारण लोग काफी मायूस हुवे। ऐसी स्थिति में अपने को गांधीवादी मानने का ढोंग रचानेवाले ढोंगियोंपर परसाई ने व्यंग्य किया है। परसाई ने यह भी समझ लिया था कि, आजादी जनता को नहीं मिली, बल्कि उसके शोषकों को मिली है। आजादी की लडाई के नेताओं की लडाई के समय की कथनी और गद्दी मिलने के बाद की करनी में जो जमीन आसमान का अंतर दिखायी दिया, उसकी ओर लेखक ने अपने व्यंग्य के माध्यम से ही संकेत किया है।

पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ तथा पूँजीवादी मूल्योंके खिलाफ संघर्ष और इस संघर्ष चेतना की ठोस और यथार्थ अनुभूति से प्रेरित होनेवाली राजनीति उनके लेखन का मुख्य आधार है। पूँजीवादी राजनीति के

कुरूप और जनविरोधी चरित्र को बेपर्दा करने के अनेक रूप परसाईजी जानते है ।

बर्नार्ड शॉ के मतानुसार व्यंग्य लिखने का सर्वोत्तम तरीका है, सत्य कहना । हिंदी साहित्य के इतिहास में इस तरीके का सर्वोत्तम प्रयोग परसाईजी ने किया है । इस प्रयासमें परसाई ने पाठकों को अनुभव करा दिया है कि, राजनीति के संपर्क से लेखन किसतरह श्रेष्ठ बनता है और साथही जनता को प्रिय भी ।

भारत के संदर्भ में देखा जायें तो हमारे देश की राजनीति पिछले दो दशको में अत्यंत पेचीदे और जटिल रास्ते से गुजरती हुयी दिखायी देती है । अस्थिरता के ऐसे दौर में राजनीतिक लेखन करना अत्यंत कठीन काम है । यह कठिनता लेखनकार्य की दृष्टि से और जीवन की व्यावहारिकता की दृष्टि से भी महसूस होती है । लेकिन परसाईजी की कलम कहींपर भी अवरूध्द नहीं हुयी । जनसंघकी प्रतिक्रिया के रूपमें निर्मित हुयी थोडी-बहुत व्यावहारिक कठिनाई का उन्हें जरूर अनुभव हुआ । परंतु उनकी निर्भीक प्रवृत्ति के कारण इस पूरे दौर में परसाईजी की लेखनी बेधडक, उसी बेधकता से चलती रही । इसका सारा श्रेय उनकी मार्क्सवादी प्रतिबध्दता को है । शायद इसी से ही उन्होंने राजनीति की वैज्ञानिक समझ और जीवन में अड़िग आस्था पायी है ।

परसाईजी के लेखन की राजनीति मानवीय संवेदना को सामाजिक आधार देने की राजनीति है, मानव-मूल्य को प्रतिष्ठित करनेवाली राजनीति है । इसका कारण यह है कि, परसाईजी जनता के लेखक है, जनता के बीच से आते हैं, जनता के बीच रहते है, जनता की समस्याएँ उनकी समस्याएँ हैं । इसीलिये आम जनता की तरह वे भी मानव-जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश में सामाजिक प्रक्रिया से गुजरते हुये राजनीति से जुडते हैं । इसीके

आधारपर ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि, राजनीति उनके लेखन का संस्कार है। यह संस्कार मध्यकालीन चेतना से मुक्ति और आधुनिक वैज्ञानिक एवं समाजवादी चेतना की स्वीकृति से विकसित हुआ है। यह संस्कार उन्हें जनता के लगाव, जनसंघर्षों से जुड़ाव और मानव-मूल्यों को प्रतिष्ठित करने की प्रतिबध्दता से संबंधित करता है। इसीलिये तो उनमें राजनीति के गुणों का बहुत ही साफ-सुथरे ढंगसे किया हुआ विनियोग बहुत ही सहज रूपमें देखने को मिलता है। इसी ढंगकी राजनीति से लेखन कैसे श्रेष्ठ बनता है, इसका उत्तम उदाहरण परसाईजी का लेखन है।

परसाईजीने व्यंग्य को उसके सामंती मनोरंजन के परिवेश से ऊपर उठाकर उसका प्रजातंत्रीकरण किया और व्यंग्य को गहरे सामाजिक आशयों से संबंधित किया। बहुत ही जल्दी में लिखी गयी, उनकी कुछ राजनीतिक टिप्पणियों को छोड़ दिया जाये, तो उनकी बहुत सारी रचनाएँ सामाजिक जिम्मेदारी को निभाती है। इस सिलसिले मे आगे आनेवाले पाठक को भी वे अपने साथ ले चलते हैं। सामाजिक विसंगतियों-पर प्रहार करते समय भी परसाई की गहरी मानवीय संवेदना बराबर मौजूद रहती है। यही इन्सानी संलग्नता उनके लेखन को सार्थकता देती है।

सामाजिक आशयों से संबंधित परसाई अपनी बात साफ तथा स्पष्ट ढंगमें कहने के लिये मशहूर है। वे दिलखुलास, दो टूक और बेलाग हैं। इसीलिये उनके सबसे मनचाहे दोस्त है कबीर ('जो फक्कड, मनमौजी, घर फूंक तमाशा देखनेवाले और दुनिया के सामने निडर होकर' जीने की हिंमत रखनेवाले हैं। अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठानेवाला रचनाकार ही तनकर खड़ा रह सकता है और इसीकारण ही परसाई हिंदी व्यंग्य के क्षेत्र में पहले और आखरी सिरेपर डटकर खड़े दिखायी देते हैं।

हरिशंकर परसाई अपने लेखन को एक सामाजिक कर्म के रूपमें परिभाषित करते हैं। उनकी ऐसी धारणा है कि, सामाजिक अनुभव के बिना सच्चा और वास्तविक साहित्य लिखा नहीं जा सकता। साहित्य-कार और सामाजिक अनुभव के अंतर्संबंधों की व्याख्या करते हुये वे लिखते हैं -

"साहित्यकार का समाज से दोहरा संबंध होता है। वह समाज से अनुभव लेता है, अनुभव में भागीदार होता है। वह इन सामाजिक अनुभवों का विश्लेषण करता है, कारण और अर्थ खोजता है, उन्हें संवेदना के स्तरतक ले जाता है और उन्हें रचनात्मक चेतना का अंग बनाकर रचना करता है और फिर समाज से पायी इस वस्तु को रचनात्मक रूप देकर फिर समाज को लौटा देता है। इसतरह साहित्य एक सामाजिक कार्य हो जाता है।"(३)

परसाई के व्यंग्यका लक्ष्य परिवर्तन है। सामाजिक अनुपात बिगड़ा हुआ है। इसीकारण विसंगति उभारने तथा अनुपात ठीक करने का व्यंग्य का उद्देश्य होता है। अपने उद्देश्य की पूर्ति में परसाई केवल अखबारी सीधेपन का इस्तेमाल न करके 'फैन्टसी' का सहारा लेते हैं। परसाई के लेखन में वर्णित फैन्टसी के मूल चरित्र को समझाते हुये व्यंग्य की करवट के साथ लक्ष्यतक जाना संभव है। इस दृष्टि से देखा जाये तो परसाई आधुनिक हिंदीके संपन्न व्यंग्य लेखक है।

...

द्वितीय अध्याय

संदर्भ सूची

१) `कबीरदास` - क्रांतिकुमार जैन । पृ.८५

२) `कथा विवेचना और गद्य शिल्प` - रामविलास शर्मा । पृ.१२९

३) `आँखन देखी` - संपादक कमलाप्रसाद
`कहानीकार की तरह` - मधुरेश । पृ.२१६